अध्याय 14

अ. ताल परिचय
ब. तालों का तुलनात्मक अध्ययन

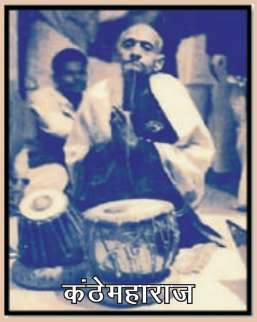

अ. ताल परिचय

'ताल' शब्द की व्युत्पति संस्कृत भाषा की तल धातु में 'घञ्' प्रत्यय जोड़ने से हुई है। जहाँ तल का अर्थ प्रतिष्ठायंक है। आचार्य शारंगदेव ने ताल की व्युत्पत्ति के बारें में संगीत रत्नाकर में लिखा है :–

तलस्तल प्रतिष्ठायामिति धातोर्धत्रि स्मृतः।
गीतंवाद्यंतथानृत्त यतस्तालेप्रतिष्ठितम्।।

(सं. रत्नाकर 5/2)

अर्थात् प्रतिष्ठा अर्थ वाली 'तल' धातु से घञ् प्रत्यय लगाने से 'ताल' शब्द की उत्पत्ति मानी है। गीत, वाद्य, नृत्य को परिमित करने वाले तथा सशब्द तथा निःशब्द क्रियाओं द्वारा लघु, गुरू, प्लुत आदि में परिछिन्न होकर परिमाप किये जाने वाले काल को ताल बताया है।

आचार्य भरतमुनि ने ताल की उत्पत्ति के विषय में नाट्यशास्त्र में लिखा है– काल का आवृत्त होने वाला क्रियात्मक खंड जो गीत वाद्य, नृत्य को अपने ऊपर धारण करता है वह ताल है।

ताल संगीत का प्राण है, संगीत शास्त्र में लय ताल की जननी कहलाती है। जिस प्रकार व्याकरण के बिना भाषा, बिना पतवार के नाव, नमक रहित भोजन होता है उसी प्रकार ताल विहीन संगीत रसहीन, प्रभावहीन है। ताल संगीत की संजीवनी शक्ति है जो संगीत में स्फूर्ति उत्पन्न कर श्रोताओं के मन को प्रफुल्लित करता है।

गायन वादन व नृत्य तीनों ही ताल एवं लय पर अवलम्बित है। संगीत में कई तालें है जिनकी भिन्न–भिन्न मात्रा, खाली, भरी, विभाग, बोल आदि है। शास्त्रीय संगीत में–त्रिताल, एकताल, झूमरा, तिलवाडा आदि उपशास्त्रीय में दीपंचदी, चॉचर, कहरवा, दादरा आदि तालों का प्रयोग होता है।

तालों का वर्णन

रूपक

रूपक तबले का अत्यन्त लोकप्रिय ताल है। जिसका प्रयोग शास्त्रीय और उपशास्त्रीय दोनों ही प्रकार की रचनाओं में समान रूप से होता है। मध्य लय के ख्याल, गीत, भजन, ग़ज़ल तथा तन्त्र तथा सुषिर वाद्यों के गतों की संगति में इस ताल का प्रयोग होता है। स्वतंत्र वादन में पेशकार, कायदे, रेले, टुकड़े, मुखड़े, गतें जैसी रचनाओं भी इसमें मिलती है। सात मात्राओं के इस ताल को विभाग 3/2/2 का होने के कारण यह विषम पद ताल हुआ। कुछ लोग इसके सम पर खाली मानते है जबकि कुछ ताली क्योंकि अन्य किसी भी ताल में सम पर खाली नहीं है। किन्तु अपवादस्वरूप इस ताल के सम पर खाली माना जा सकता है।

ताल रूपक

मात्रा – 7 विभाग– 3 ताली– 1, 4, 6 मात्रा पर

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7
ठेका	तीं	तीं	ना	धीं	ना	धीं	ना
चिन्ह	X			2		3	
दुगुन	तींतीं	नाधीं	नाधीं	नातीं	तींना	धींना	धींना
चिन्ह	X			2		3	
तिगुन	तींतींना	धींनाधीं	नातींतीं	नाधींना	धींनातीं	तींनाधीं	नाधींना
चिन्ह	X			2		3	
चौगुन	तींतींनाधि	नाधिनाती	तींनाधिना	धिनातींतीं	नाधिनाधि	नातींतींना	धिनाधिना
चिन्ह	X			2		3	

ताल तीवरा

तीवरा तीव्रा या तेवरा एक ही ताल के भिन्न–भिन्न नाम है। कुछ लोग इसे गीतांगी नाम से भी सम्बोधित करते है। तबले पर प्रमुखता से बजने वाला यह पखावज का प्राचीन और महत्वपूर्ण ताल है। पखावज पर स्वतंत्र वादन और ध्रुवपद गायकी के साथ इसका वादन होता है अतः छन्द, परण, टुकड़े तिहाइंया आदि इसमें खूब बजते है इसका वादन मुख्यतः मध्य व द्रुत लय में होता है।

उत्तर भारतीय संगीत का रूपक ताल व दक्षिण भारतीय संगीत के मिश्र जाति का त्रिपुट तालतीवरा के सदृश है।

ताल तीवरा

मात्रा – 7 विभाग– 3 ताली– 1, 4, 6 मात्रा पर खाली– कोई नहीं।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7
ठेका	धा	दीं	ता	तिट	कत	गदि	गन

चिन्ह	X			2			3	
दुगुन	धादीं	तातिट	कतगदि	गनधा	दींता		तिटकत	गदिगन
चिन्ह	X			2			3	
तिगुन	धादींता	तिटकतगदि	गनधादीं	तातिटकत	गदिगनधा		दींतातिट	कतगदिगन
चिन्ह	X			2			3	
चौगुन	धादींतातिट	कतगदिगनधा	दींतातिटकत	गदिगनधादीं	तातिटकतगदि		गनधादींता	तिटकतगदिगन
चिन्ह	X			2			3	

तालदीपचंदी

दीपचंदी और चाचर ये दोनो नाम वस्तुतः एक ही ताल के है। यह उपशास्त्रीय संगीत का ताल है अतः तबले के साथ–साथ ढोलक और नक्कारे आदि पर भी इसका वादन होता है। ठुमरी और होली गायन की संगति हेतु इसका मुख्य रूप से प्रयोग होता है। यह स्वतंत्र वादन का ताल नहीं है। विलम्बित, मध्य और द्रुत लय में इसका वादन होता है। इसमें लग्गी–लड़ी का सुंदर प्रयोग होता है।

तालदीपचंदी

मात्रा – 14 विभाग– 4 ताली– 1, 4, 11 पर खाली– 8 पर

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ठेका	धा	धिं	ऽ	धा	धा	तिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	धा	धा	धिं	ऽ
चिन्ह	X			2				0			3			
दुगुन	धाधिं	ऽधा	धातिं	ऽता	तिंऽ	धाधा	धिंऽ	धाधिं	ऽधा	धातिं	ऽता	तिंऽ	धाधा	धिंऽ
चिन्ह	X			2				0			3			
तिगुन	धाधिंऽ	धाधातिं	ऽतातिं	ऽधाधा	धिंऽधा	धिंऽधा	धातिऽ	तातिंऽ	धाधाधि	ऽधाधिं	ऽधाधा	तिंऽता	तिंऽधा	धाधिंऽ
चिन्ह	X			2				0			3			
चौगुन	धा	धिं	ऽ	धा	धा	तिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	ऽऽधाधिं	ऽधाधातिं	ऽतातिंऽ	धाधाधिंऽ
चिन्ह	X			2				0			3			

ताल झूमरा

झूमरा या झूमा तबले का ताल है। विलम्बित लय के ख्याल गायन की संगति में इसका विशेष रूप से प्रयोग होता है। यह मिश्र जाति का अर्द्ध समपद ताल है, क्योंकि इसका विभाग क्रमशः 3/ 4/ 3/ 4 का है। कुछ पुराने तबला वादक इसमें स्वतंत्र वादन भी प्रस्तुत करते है अतः उस समय इसमें पेशकार, कायदा, बाँट, गत आदि का भी प्रस्तुतिकरण होता है।

ताल झूमरा

मात्रा – 14 विभाग– 4 ताली– 1, 4, 11 मात्रा पर खाली– 8 पर

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ठेका	धि	ऽधा	तिरकिट	धि	धि	धागे	तिरकिट	ति	ऽता	तिरकिट	धि	धि	धागे	तिरकिट

चिन्ह	X			2				0				3				
दुगुन	धि	ऽधा	तिरकिट	धि	धि	धागे	तिरकिट	धिऽधा	तिरकिटधि	धिधागे		तिरकिटति	ऽतातिरकिट	धिधि	धागेतिरकिट	
चिन्ह	X			2				0				3				
तिगुन	धि	ऽधा	तिरकिट	धि	धि	धागे	तिरकिट	ति	ऽता	ऽधिऽधा						
चिन्ह	X			2				0								
	तिरकिटधिधि			धागेतिरकिटति				तातिरकिटधि				धिधागेतिरकिट				
	3															
चौगुन	धि	ऽधा	तिरकिट	धि	धि	धागे	तिरकिट	ति	ऽता	तिरकिट		?	?	?	?	
चिन्ह	X			2				0				3				

दुगुन और तिगुन के आधार पर विद्यार्थी स्वयं चौगुन बनाने का प्रयास करें।

ताल पंजाबी

अद्धा, सितारखानी और पंजाबी एक ही ताल के तीन नाम है। यह भी तीन ताल का ही एक प्रकार है। सोलह मात्रा में उन रचनाओं जिनमें एक विशेष प्रकार की कमनीयता और लचक होती है– की संगति इस ताल के द्वारा की जाती है। ठुमरी, टप्पा, भजन और गीत आदि की संगति इस ताल के द्वारा की जाती है। इसकी गति में एक विशेष प्रकार की वक्रता दृष्टिगत होती है यही इसका गुण व विशेषता है।

ताल पंजाबी

मात्रा – 16 विभाग– 4 ताली– 1, 5, 13 पर खाली– 9 पर

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ठेका	धा	ऽधि	ऽक	धा	धा	ऽधि	ऽक	धा	धा	ऽति	ऽक	ता	ता	ऽधि	ऽक	धा
चिन्ह	X				2				0				3			
दुगुन	धा	ऽधि	ऽक	धा	धा	ऽधि	ऽक	धा	धाऽधि	ऽकधा	धाऽधिऽकधा		धाऽति	ऽकता	ताऽधि	ऽकधा
चिन्ह	X				2				0				3			

तिगुन

धा	ऽधि	ऽक	धा	धा	ऽधि	ऽक	धा
X				2			
धा	ऽति	ऽऽधा	ऽधिऽकधा	धाऽधिऽक	धाधाऽति	ऽकताता	ऽधिऽकधा
0				3			

चौगुन

धा	ऽधि	ऽक	धा	धा	ऽधि	ऽक	धा
X				2			
धा	ऽति	ऽक	ता	धाऽधिऽकधा	धाऽधिऽकधा	धाऽतिऽकता	ताऽधिऽकधा
0				3			

ताल तिलवाड़ा

तिलवाड़ा ताल मूलतः तीनताल का विलम्बित रूप है। 16 मात्रा में निबद्ध विलम्बित ख्याल गायन की संगति इसी ताल द्वारा की जाती है। यही कारण है कि इस ताल की मात्रा अवधि 32, 64 मात्राओं तक बढ़ायी जा सकती है। इस ताल में एक गाम्भीर्य होता है।

ताल तिलवाड़ा

मात्रा – 16 विभाग– 4 ताली– 1, 5, 13 मात्रा पर खाली– 9 पर

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ठेका	धा	तिरकिट	धि	धि	धा	धा	ति	ति	ता	तिरकिट	धि	धि	धा	धा	धि	धि
चिन्ह	X				2				0				3			

दुगुन

धातिरकिट	धिधि	धाधा	तिति	तातिरकिट	धिधि	धाधा	धिधि
X				2			
धातिरकिट	धिधि	धाधा	तिति	तातिरकिट	धिधि	धाधा	धिधि
0				3			

चौगुन

धातिरकिटधिधि	धाधातिति	तातिरकिटधिधि	धाधाधिधि	धातिरकिटधिधि	धाधातिति	तातिरकिटधिधि	धाधाधिधि
X				2			
धातिरकिटधिधि	धाधातिति	तातिरकिटधिधि	धाधाधिधि	धातिरकिटधिधि	धाधातिति	तातिरकिटधिधि	धाधाधिधि
0				3			

ब. तालों का तुलनात्मक अध्ययन

(1) एकताल–चौताल (2) झप ताल–सूलताल

(3) दीपचंदी–झूमरा (4) रूपक–तीव्रा

एकताल–चौताल का तुलनात्मक अध्ययन

समानता

एकताल	चौताल
1. इस ताल में 12 मात्रायें होती है	1 चौताल में भी 12 मात्रायें होती है
2. इसमें 6 विभाग 2–2 मात्रा के होते है	2 इसमें भी 6 विभाग 2–2 मात्रा के होते है
3. 1,5,9,11 पर ताली है	3 चौताल में भी 1,5,9,11 पर ताली है
4 एकताल में 3,7 मात्रा पर खाली है	4 चौताल में भी 3,7मात्रा पर खाली है
5 इस ताल में स्वतंत्र वादन व संगति की जाती है	5 इस ताल में स्वतंत्र वादन व संगति की जाती है

भिन्नता

1. एकताल तबले की ताल अर्थात बन्द बोल की ताल है	1. चौताल पखावज मृदंग की अर्थात खुले बोल की ताल है
2. यह ताल द्रुतख्याल व विलंबित ख्याल की संगति में प्रयुक्त होती है	2. चौताल ध्रुपद गायन के साथ बजाई जाती है

झप ताल–सूलताल का तुलनात्मक अध्ययन

समानता

झपताल	सूलताल
1. इस ताल में 10 मात्रायें होती है ।	1. सूलताल में भी 10 मात्रायें होती है ।
2. इसमें 3 ताली व एक खाली है।	2. इसमें भी 3 ताली व एक खाली है ।
3.इसमें स्वतंत्र वादन किया जाता है।	3. इसमें भी स्वतंत्र वादन किया जाता है।

तुलना

झपताल	सूलताल
1. इस ताल के विभाग 2–3–2–3 भाग होते है ।	1. इस ताल के विभाग 2–2 मात्रा के होते है ।
2. इसमें 4 विभाग होते है।	2. इसमें 5 विभाग होते है ।
3. झपताल में ताली 1,3,8 मात्रा पर होती है।	3. इस ताल में ताली 2, 5, 7 मात्रा पर होती है ।
4. इसमें खाली 6 मात्रा पर होती है।	4. इस ताल में खाली 3, 9 मात्रा पर होती है ।
5. यह तबले की ताल है अर्थान बन्द बोल की ताल है।	5. यह पखावज की ताल है अर्थात खुले बोल की ताल है ।
6. झपताल द्रुत ख्याल गीत गजल आदि की संगति में प्रयुक्त की जाती है ।	6. सूलताल ध्रुपद गायकी के साथ बजाई जाती है ।

दीपचंदी झूमरा का तुलनात्मक अध्ययन

समानता

दीपचंदी

1. इस ताल में 14 मात्रायें होती है।
2. इसमें 4 विभाग 3–4–3–4 मात्रा के होते है।
3. इस ताल में 1, 4, 11 मात्रा पर ताली खाली है ।

झूमरा

1. झूमराताल में भी 14 मात्रायें होती है ।
2. इस ताल में भी 4 विभाग 3–4–3–4 मात्रा के होते है ।
3. इस ताल में भी 1, 4, 11 मात्रा पर ताली एवं 8 मात्रा पर एवं 8 मात्रा पर खाली है ।

तुलना

दीपचंदी

1. दीपचंदी स्वतंत्र वादन का ताल नहीं है।
2. ठुमरी व होली गायन की संगति हेतु यह ताल है।

झूमरा

1. इस ताल में स्वतंत्र वादन व संगति की जाती है ।
2. विलम्बित लय के ख्याल गायन की संगति में बजाई जाती विशेष रूप से बजाई जाती है ।

रूपक तीव्रा का तुलनात्मक अध्ययन

समानता

रूपक

1. रूपक में 7 मात्रायें होती है
2. इस ताल में तीन विभाग 3–2–2 के होते है

तीव्रा

1. तीव्रा में भी 7 मात्रायें होती है
2. इस ताल में भी तीन विभाग 3–2–2 के होते है

भिन्नता

रूपक

1. रूपक तबले की लोकप्रिय ताल है
2. मध्य लय के गीत प्रकारों, गतों की संगति में इस ताल का प्रयोग होता है

तीव्रा

1. तीव्रा पखावज का प्राचीन व महत्वपूर्ण ताल है
2. ध्रुपद गायकी के साथ इस ताल की संगति होती है

महत्वपूर्ण बिन्दु

तब्ल	–	तबला
ठेका	–	ताल के बोल
दुगुन	–	एक मात्रा में दो मात्रा
त्रिगुन	–	एक भाग में तीन मात्रा
चौगुन	–	एक मात्रा में चार मात्रा
सम	–	ताल की पहली मात्रा चिन्ह X (सम)
खाली	–	ताली लगाये बिना हाथ को एक तरफ उठाकर गिनने की क्रिया चिन्ह O
ताली	–	ताल के ठेके में लगने वाली ताली की संख्या चिन्ह 2, 3, 4 आदि
मुखड़ा	–	कुछ बोल बजाकर सम पर आने कि क्रिया।
कायदा	–	ठेके की रचना के अनुसार रचे गये बोल।

लय	–	दो क्रियाओं के बीच का समान अन्तराल
मध्य लय	–	वह लय जो न ज्यादा तेज हो न ज्यादा धीमी
विलंबित लय	–	मध्य लय के ठीक दुगनी धीमी गति
द्रुत लय	–	मध्य लय की ठीक दुगनी तेज गति

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. दीपचंदी में मात्रायें है

   (क) 10 (ख) 12 (ग) 14 (घ) 16

2. पंजाबी ताल में विभाग है

   (क) 3 (ख) 6 (ग) 5 (घ) 4

3. झपताल ताल में खाली है

   (क) दूसरी मात्रा पर (ख) छठी मात्रा पर (ग) आठवीं मात्रा पर (घ) दसवी मात्रा पर

4. चौताल बजाई जाती है

   (क) पखावज पर (ख) ढोलक पर (ग) ठुमरी के साथ (घ) भजन के साथ

5. ताल की गति में वक्रता दृष्टिगत होती है।

   (क) दादरा (ख) कहरवा (ग) पंजाबी (घ) त्रिताल

6. एक मात्रा में दो मात्रा के बोल कहलाते हैं।

   (क) तिगुन (ख) दुगुन (ग) चौगुन (घ) मुखडा

उत्तरमाला– 1 (ग) 2 (घ) 3 (ख) 4 (क) 5 (ग) 6 (ख)

लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. पाठ्यक्रम की 16 मात्रा की ताल लिखो।
2. पाठ्यक्रम की छः विभाग की ताल लिखिये।
3. ताल की संक्षिप्त में व्याख्या कीजिये।

निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिये

1. झपताल एवं सूलताल में तुलनात्मक अन्तर स्पष्ट कीजिये
2. रूपक एवं तीव्रा तालों का ठेका, दुगुन व चौगुन लिखिये।

उ. जाकिर हुसैन